



SS
28/9/2

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 1 PART III—Section 1

प्रार्थकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

४१

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 26, 1982/आवण 4, 1904

No. 4]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 26, 1982/SRAVANA 4, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

आमंत्रण अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धरा 269 वा (1)
के अनुसार सहाया

आदेश मरुषा : राज सहा. आ अर्जन/1250

भारत सरकार

कार्यालय सहायक आयकर आवृक्त (निरीक्षण) प्रजन रेंज, जयपुर

तारीख 14 जूलाई, 1982

यत् मृष्टे, शोहृन सिद्ध, आपकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269बि के प्रधीन वक्षम प्रधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर मंपति, जिसका उचित मूल्य 25,00/- रु. से अधिक है और जिसकी स० रुपये है तथा जो उद्ययपुर में स्थित है, (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय उद्ययपुर में, रजिस्ट्रीकरण, प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख 5-10-1981 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम है दृश्यमान प्रतिफल के लिए प्रत्यस्तिन की गई है और मृष्टे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पद्धति प्रतिशत से अधिक है, और अन्तररक (अन्तरको) और अस्तरिती (अस्तरितियों) के बीच से अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्न-लिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निकित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है :—

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की बावत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के अन्तरक

के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए;
और या

(अ) ऐसी किसी प्राय या किसी धन या अन्य मासितयों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगनार्थ प्रत्यस्तरिती हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, इप्पने में सविष्ठा के लिए;

अतः अब, उक्त प्रधिनियम की धारा 269ग के प्रनुसारण में ही, उक्त प्रधिनियम की धारा 269 वी उपधारा (1) के प्रधीन, निष्प-लिखित व्यक्तियों पर्याप्ति :—

- (1) श्रीमती सुजाता एन० सौनी पति श्री नरेन्द्र सौनी, उदयपुर (अन्तरक)
 - (2) डाक्टर (मिसेज) मालती एस०, जोहरी, बम्बई (अन्तरिती)
 - * (3) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह व्यक्ति जिसके प्रधियोग में संपत्ति है)
 - * (4) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह व्यक्ति, जिसके बारे में अधोलिखित जानता है कि वह सम्पत्ति में हितावश है)

को पहुँचता जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रर्जन के लिए कार्यवाहिका करता है। उक्त सम्पत्ति के प्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप—

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की लापौल

मेरे 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि वाले में समाप्त होती है, के अंतर्गत पूर्वोक्त व्यक्तियों में से निम्न आकृति द्वारा;

(अ) इस सूचना के राजगत में प्रकाशन को नारीख से 45 दिन के भीतर उस स्थावर सम्पत्ति में हितशुद्ध किए गये व्यक्ति द्वारा, अधिसम्नाशकी के पास विक्षिप्त में किये जा सकते।

सार्वोक्तरण——इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के अधिकारित हैं, वही अर्थ देता जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूचि:

लैण्ड मेज़रिंग 28,288 वर्गफुट जो विठल वाटिका, उदयपुर जो उपायकर, उदयपुर द्वारा १८ मंड़या 2284 दिनांक ५-१०-८१ पर वित्तव्यक्रम पत्र में और विमुक्त स्पष्ट स्विकृति है।

मोहन सिंह,

मध्यम प्राधिकारी

नारीख 14-6-82

मोहर : आयकर आयकर आयकर (निरीक्षण)
(जो लागू न हो उसे काट दीजिए) अर्जन रेज, जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961).

Ref. No. 1250

Government of India
Office of the I.A.C.
Acquisition Range, JAIPUR
Date 14/7/82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 5-10-1981 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

- Mrs. Sujata N. Soni, w/o Sh. Narendra Soni, Udaipur. (Transferor)
- Dr. (Mrs). Malti S. Johari, Bombay. (Transferee)

*3(3) Shri/Shrimati/Kumari
(Persons in occupation of the Property).

*4(4) Shri/Shrimati/Kumari(Person whom the under signed knows to be interested in the property objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation :—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land measuring 28 288 sq. ft. situated at Vithal Vatika, Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S. R. Udaipur vide No. 2284 dated 5/10/81.

MOHAN SINGH,
Competent Authority
(Inspecting Assistant
Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jaipur)

*Strike off where not applicable.

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 अ (1) के अधीन अधिसूचना

आदेश मंडया . राज./मन्त्रा. आ. अर्जन/1251

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43)
कार्यालय महायक आयकर आदेश (निरीक्षण)
अर्जन रेज, जयपुर
नारीख 14-7-82

यह मूल मोहन सिंह, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उन्न अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 का के प्रधीन मध्यम प्राधिकारी को, यह विषयास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है और जिसकी

ओर जिसको ८० भिन्न है जो उदयपुर में स्थित है, (और इसमें उपर्युक्त अनुसूची में और पृष्ठ स्पष्ट में वर्णित है) रजिस्टरेकर्ट प्रधिकारी के वार्षिक उदयपुर में, रजिस्टरेकर्ट प्रधिकारी, १९०८ (१९०८ का १६) के अधीन, वारीब ५-१०-१९८१ को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्वरित वाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पद्धति प्रतिनिधित्व में अधिक है, और अन्तरक (अन्तरक) और अन्वरिती (अन्वरितिया) के बाच ऐसे अन्वरण के लिए तथा पाया गया प्रतिक्रिया निम्नलिखित उन्नय से उक्त अन्वरण प्रिवित में वारत्रिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

(क) अन्वरण से हृद किसी की आय की वापन, आयकर प्रधिनियम, १९६१ (१९६१ का ४१) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायिन्व में वर्गी बचने या उमरे बचने में मुक्तिधा के लिए; और या

(ख) एसी किसी आय या विसी धन या ग्रन्त आमत्यों का जिसे भागीय आयकर प्रधिनियम, १९२२ (१९२२ का ११) या आयकर प्रधिनियम १९६१ (१९६१ का १३) या धन का प्रधिनियम, १९५७ (१९५७ का २७) के प्रयोगनाथे अन्वरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, इसपाने में मुक्तिधा के लिए

अत अब उक्त प्रधिनियम की धारा १६७ग के अनुग्रहण में से उक्त प्रधिनियम की धारा २६७ग की उपवाग (१) के अधीन निम्नलिखित अधिकारी, अर्थात् —

(१) श्री मुरेन्द्र पुत्र श्री मोहन लाल सौनी द्वारा आमंत्रित
सेवाकर, उदयपुर (अन्तरक)

(२) डाक्टर (मिसेज) मायनी एम जोहरी, बम्बई (अन्वरिती)

*(३) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह अन्ति जिसके प्रधिनाग...
.....में सम्पत्ति है)

*(१) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह व्यक्ति, जिसके द्वारा म...
.....अर्थात्मनाथरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबढ़ है)
को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्य-
वाहिया करना है। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सबध में काई भी आधीप,—

(क) इस सूचना के गतिविध में प्रकाशन की तारीख से १५ दिन
की अवधि या नमस्वर्धी अधिकारी पर सूचना की तामाल
में ३० दिन की अवधि जो भी अवधि बाद में समाप्त होती
हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से निम्नी अन्ति द्वारा,

(ख) इस सूचना के गतिविध में प्रकाशन की तारीख से ५५ दिन
के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी ग्रन्त व्यक्ति
द्वारा, अधोलिस्तरी के पास प्रिवित भे किये जा गकें।

स्पेस्टरीकरण—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर प्रधिनियम,
[१९६१ (१९६१ का ४३) के अधाय २०क में परिभासित
है, वही अर्थ हैं जो उम अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सैण्ड मेजिन्ग २०,४७० वर्फेट स्लिट विट्ल थाटिका उदयपुर जो
उपर्युक्त, उदयपुर द्वारा कम सम्भा २२८१ दिनाक ५-१०-५१ पर
परिवर्त्त विक्रय एवं में और विस्तृत रूप से विवरणित है।

मोहन मिह

वारीब १४-७-८२

मम्पत्र प्रधिनागी

मोहन

महायक आयकर आमुक्त (निरीक्षण)

*(जो लागू न हो उमे काट थीजिए)

अर्जन रेज, जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269 D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. 1251

Government of India
Office of the I.A
Acquisition Range, Jaipur
Date : 14-7-82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 5-10-81 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer ; and/or

b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269 D of the said Act to the following persons namely :—

(1) Shri Surendra S/o Mohanlal Soni, C/o Ayurved Sewasharam, Udaipur (Transferor)

(2) Shri/Shrimati/Kumari....Dr. (Mrs. Mahti, S. Johari, Bombay (Transferee)

*(3) Shri/Shrimati/Kumari(Person in occupation of theproperty)

(4) Shri/Shrimati/Kumari(Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections, if any to the acquisition of the said property)

at Udaipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 13-10-81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

- (1) Shrimati Shanti S. Soni
w/o Shri Sreendera Soni,

C/o M.H. Soni, Ayurved Sewashram,
Udaipur(Transferor)
- (2) Shrimati Dr. (Mrs.) Malti S. Johari,
Bombay(Transferee)
- *(3) Shri/Shrimati/Kumari.....(Person in
occupation of theproperty).
- *(4) Shri/Shrimati/Kumari(Person whom
the undersigned
knows to be interested in the property) objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expire later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:— The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land measuring 20, 167.5 sq. ft. situated at Vithal Vatika, Udaipur and more fully described in the sale

dced registered by S.R. Udaipur vide No. 2280 dated 13-10-81.

MOHAN SINGH,
Competent Authority

Seal : (Inspecting Assistant Commissioner of
Income Tax Acquisition Range, Jaipur).

*Strike off where not applicable

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) के बारा 269 वा (1)
के अधीन सूचना

प्रादेश संख्या : राज०/मह० आ० अर्जन/1253 भारत सरकार
कार्यालय महायक आयकर प्राप्तक (निरीक्षण) अर्जन रेंज,
जयपुर

तारीख 14-7-82

यतः मुझे भोहन सिंह, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रत्याख्यात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की बारा 269 वा के अधीन सकाम प्राप्तिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है और जिसको सं० भूमि है तथा जो उदयपुर में स्थित है, (और इससे उपावश्यक अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ट अधिकारी के कार्यालय उदयपुर में, रजिस्ट्रीकर्ट अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख 14-10-81 को पूर्णोत्तम सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा पूर्वोत्तम सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकर्कों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तथा पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की वापत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्य में कर्मी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या

(ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या भव्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगसार अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना आविह था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः, मान, उक्त अधिनियम की बारा 269 वा के अनुसूचने में, उक्त अधिनियम की बारा 269 वा की उपाधा (1) के अधीन, निम्नलिखित अस्तियों, अर्थात्—

- (1) श्री नरेन्द्र एम० सोनी युक्त मोहन लाल सोनी द्वारा आयुर्वेद सेवाश्रम, उदयपुर. (अन्तरक)।
- (2) डा० (सिसेज) मानसी एम० जाहरी, बर्मर्झ (अन्तरिती)।
- (3) श्री/श्रीमती/कुमारी(वह व्यक्ति जिसके अधियोगमें सम्पत्ति है)।
- (4) श्री/श्रीमती/कुमारी(वह व्यक्ति, जिसके बारे मेंप्रधोहस्ताकरी जास्त है कि वह सम्पत्ति में हितमद्द है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त अम्पति के प्रजेन के लिए कार्यवाहियों करता है। उसने अम्पति के प्रजेन के सम्बन्ध में कोई भी अधिकेप-

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि वा नन्मस्त्री व्यक्तियों पर सूचना की तारीख से 30 दिन की अवधि, जो भी अक्षय बद्र में समाप्त आती हो के भीड़ पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उस स्थावर अम्पति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकें।

ल्पटीकरण—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के परिभासित हैं, वही वर्ण होगा जो उस मध्याप्र में किया गया है।

अनुसूची

प्लाट आफ लैंड मेंशिंग 27.696 वर्गफुट स्टोर लाइन एवं फार्म हाउस सहित, मिस शिठिल वाटिका उदयपुर जो उप परिवेश, उदयपुर द्वारा क्रम संख्या 2283 दिनांक 14-10-81 पर पंजीयन विक्रय पत्र में और विस्तृत रूप में विवरणित है।

(मोहन सिंह)

मकान प्राधिकारी

महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

तारीख 14-7-82

*जो लागू न हो उसे काट बैंजिए

प्रजेन रेज, जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1253

Government of India

Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR

Date 14-7-82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 14/10/81 for an apparent consideration which is less the fair Market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian

Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 260C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

(1) Shri Narendra M. Soni
S/o Mohanlal Soni,
C/o Ayurved Sewashram,
Udaipur.....(Transferor)

(2) Shri/Shrimati/Kumari Dr. (Mrs.) Malti S. Johari, Bombay(Transferee).

* (3) Shri/Shrimati/Kumari(Person in occupation of the property).

* (4) Shri/Shrimati/Kumari(Person whom the undersigned.....knows to be interested in the property) objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:- The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Plot of land measuring 27.696 sq. ft. including Store house and farm house situated at Vithal Vatika Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2283 dated 14-10-81.

MOHAN SINGH,

Date 14-7-82

Competent Authority

Seal : (Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur).

*Strike off where not applicable

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धरा 269 व (1)
के अधीन सूचना

आदेश सभ्या. राज०/महा०प्रा० प्रजेन/1254

भाग्यल मरकार

कार्यालय महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) प्रजेन रेज, जयपुर

तारीख 14-7-82

यत् मुझ मोहन सिंह, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की भाग्यल 279 व के अधीन सभ्यम प्राधिकारी का, यह विश्वास करते का कारण है कि

स्थानीय समाजिक विभाग का उचित मूल्य 25,000 रुपये से अधिक है और जिसकी म० भूमि है वहा जो उदयपुर में स्थित है, (और इवंते उपाध्यक्ष अनुसूची में शीर्ष पूर्ण स्पष्ट से वर्णित है) जिसकी आधिकारी का कार्यालय उदयपुर में, जिसकी रूप से अधिनियम, 1908 (1908 का 16') के अधीन तारीख 15-10-81 की पूर्वोक्त गम्भीर के उचित बाजार मूल्य से नाम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अनुरूप का गहरा शीर्ष मुद्रे घट विवरण करने का कारण है कि यथा पूर्वोक्त गम्भीर का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पद्धति प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तर्गत (अन्तर्गतियो) के बीच ऐसे अन्तरण के लिये नया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक स्पष्ट से वर्णित नहीं किया गया है—

(क) भ्रत्यर्थ में हुई किसी आवश्यकी वाचाल, आयुकर अधिनियम, 1961 (1961 का 13) के अधीन कर देने के अन्तर्काल के दायित्व में कर्म करने या उसमें अन्तर्नियम सुविधा के लिये और; या

(अ) गोर्स किसी आय या किसी धन या धन्य आस्तियों को जिन्हे भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 13) या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रवर्जनार्थ, धनरिंग द्वारा प्रकट नहीं किया गया या किया जान, चाहिए या छिपाने में सुविधा के लिए,

अत अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुग्रहण म, से, उक्त अधिनियम की धारा 264 व की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियो, प्रथमि - -

(१) श्री माहन नाल पुत्र हारा लाल सोनी द्वारा आयर्वेद सेवाप्रमाण
उद्योग (अन्तर्रक्ष)

* (4) श्री/श्रीमती/कुमारी (यह व्यक्ति, जिसके बारे में
..... अधिकारकार्य की जानकारी है
कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

का यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता है। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी प्रश्नप्रेप—

(क) इस सूचना के गणपत्र में प्रकाश फैलारीब से 45 दिन की अवधि या नत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना को नामील में 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बार में समाप्त होती हो, के द्वितीय पूर्वांक व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,

(ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, ग्रामोदयनाकारी के पास लिखित में किए जा सकते।

साप्टीकरण—हमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का जो व्याकरण प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के मध्यां 20 के में परिभासित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

ममानि, 16,946 बर्गफूट जमिन महिला, स्थित विठ्ठल आटिका,

दिनांक १५-१०-९१ पर एक्रीव्ह विक्रम पत्र में और विस्मृति रुप
में विवरणित है।

तारीख 14-7-82

मोहन मिह, सक्षम प्राक्षिका

महार

महायक अधिकार अधिकान (निरीक्षण)

* (जा लागू न हो उमे काट द जिए)

अर्जन रंजा जयपर

**NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE
INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)**

Ref. No. 1254/

Government of India
Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
Dated 14/7/82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 15/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

(1) Shri Mohan Lal S/o Heeralal Soni C/o
Arurved Sewashram Udaipur. (Transferor)

(2) Shrimati Dr. (Mrs.) Malti S. Johari, Bombay
..... (Transferee)

*⁽³⁾ Shri/Shrimati/Kumari.....
(Person in occupation of the
property)

*4 Shri/Shrimati/Kumari.....(Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections, if any, to the

acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later
- by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property including 16,946 sq. ft. of land situated at Vithal Vatika Pichhola Lake, Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2282 dated 15/10/81.

MOHAN SINGH,

Date 14/7/82

Competent Authority

Seal : (Inspecting Asstt.Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jaipur.)

*Strike off where not applicable

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269 घ (1) के
अधीन सूचना

आदेश संख्या . राज / महाऽ आ० प्रज्ञन / 1255

भारत सरकार

कार्यालय भारतीय आयकर आयुक्त (निरीक्षण) प्रज्ञन रेंज जयपुर
तारीख 14-7-82

यह : मुझे मोहन गिह आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 घ के अधीन सक्षम प्राधिकारी का, यह विवाद करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/- रु० से अधिक है और जिसकी संख्या भूमि है नथा जो श्रीगंगानगर में स्थित है, (और इससे उपावड़ अनुसुची में और पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रश्नीन, तारीख 7-10-1981 को पूर्वान्तर सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृष्यमान प्रतिकल के लिए अन्तरिम की गई है और मुझे यह विवाद करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिकल, से, ऐसे दृष्यमान प्रतिकल के पश्चात प्रतिशत से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरकों) और प्रतिरिती (प्रतिरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल नियमित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखन में वास्तविक रूप से कठिन नहीं किया गया है:

- अन्तरण से हुई किसी आय की वापत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए प्रोग्राम; या
- ऐसी किसी आय या किसी अन्य प्राप्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन

कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिम द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए, या, छिपाने में सुविधा के लिए;

अत अब, उक्त अधिनियम की धारा 269 घ के अनुमति में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :

(1) श्री प्रज्ञन मिह श्राहंजा पुत्र श्री भूबा मिह निवासी 29 पठिनक पार्क श्री गगानगर ————— (अन्तरक)

(2) श्रीमती मधुलिका कुमारी पुत्राचारी साहिबा श्रीक मलया निवासी 121 एल मार्क कारमिकल रोड बम्बई (अन्तरिम)

(3) श्री/श्रीमती/ कुमारी ————— (वह व्यक्ति जिसके प्रधियोग में सम्पत्ति है)

(4) श्री/श्रीमती/कुमारी ————— वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रीबोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रज्ञन के लिए कार्यालय। करमा हूँ उक्त सम्पत्ति के प्रज्ञन के सम्बन्ध में कोई भी अवैधत-

(क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रवधि या नसम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तारीख से 30 दिन की प्रवधि, जो भी प्रवधि बाद में सामृत होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्ति में से किसी व्यक्ति द्वारा ।

(ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा, श्रीबोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकें।

स्पष्टीकरण—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों, का, जो अध्यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधायाय 20 या क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस प्रधायाय में दिया गया है।

अनुसूची

3 श्रीधा कृषि भूमि स्थित चक 1 लोटी श्रीगंगानगर, जो उप पंजियक, श्रीगंगानगर द्वारा क्रम संख्या 2197 दिनांक 7-10-81 पर पंजीयन दिक्षित पद्र में ओर विस्तृत रूप में दिवरण है।

(मोहन मिह मनप प्राधिकारी)

तारीख 14-7-82

मोहन

सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

*(जो लागू न हो उसे काट दीजिए)

प्रज्ञन रेंज जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1255/

Government of India
Office of the I.A.A.C. Acquisition Range,
JAIPUR
Date 14/7/82.

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Agri. land situated at Sriganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under

the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Sriganganagar on 7/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely :—

- (1) Shri Arjun Singh Ahuja s/o Shri Sukh Singh (Transferor) R/o 29-Public Park, Sriganganagar.
- (2) Shrimati Madhulika Kumari Yuvarani Sahiba of Maliya (Transferee) 121-Land Mark Carmichel Road, Bombay.
- *(3) Shri/Shrimati/Kumari. (Person in occupation of the property).
- *(4) Shri/Shrimati/Kumari. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immoveable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used, herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that chapter.

THE SCHEDULE

37 bigha of agriculture land situated at Chak 1-E Chhoti, Sriganganagar and more fully described in the 492GI/82—2

sale deed registered by S.R. Sriganganagar vide No. 2197 dated 7-10-81.

(MOHAN SINGH)

Date 14/7/82

Competent Authority

Seal (Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur.)

*Strike off where not applicable,

आधिकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 घ (1) के अधीन सूचना

आवेदन संख्या : राज०/महा० आ० अर्जन/1256

भारत सरकार

कायानिय सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज जयपुर
तारीख 14 जूलाई, 1982

यह मुझे मोहन निह, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 घ के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उक्त मूल्य 25,000/- २० से अधिक है और जिसकी स० कृषि भूमि है तथा जा श्रीगगानगर में स्थित है, (और इसमें उपबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है) रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के कार्यालय था। गगानगर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, तारीख 12-10-५१ को पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरिक्ष की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है, और अन्तरक (अन्तर्को) और अन्तरिक्षीय (अन्तरिक्षियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए नया पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखन में वास्तविक रूप में कथित नहीं किया गया है—

(क) अन्तरण से हुई किसी प्राय का बावत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अस्तरक के वायित में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और, या

(ख) ऐसी किसी प्राय या किसी धन या अन्य सारितयों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या आयकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगनार्थ अन्तरिक्षीय हारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए या, छिपाने में सुविधा के लिए

अत अब उक्त अधिनियम की धारा 269 घ में अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपाधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्धान—

(1) श्री प्यारा मिह, स्वर्ण मिह एव बचित्तर भिह पुक्त श्री वरयाम सिह निवासी चक 1 ए लोट, श्रीगगानगर (अस्तरक)

(2) मैतर्स गणेश उद्योग, 1-ए लोट, श्रीगगानगर (आस्तरी)

(3) श्री/श्रीमती/कुमारी — — — (वह व्यक्ति जिसके अधियोग — — — में सम्पत्ति है)

(4) श्री/श्रीमती/कुमारी — — — (वह व्यक्ति, जिसके बारे में अशोकतार्की जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कारोबाहिया करता है। उक्त सम्पत्ति के अर्जन को सम्बन्ध में कोई भी आंकेप—

- (क) इस सूचना के गजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन वित की गयधिया या नस्मवन्धी श्राकारों पर सूचना की तारीख से 30 दिन के अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भावतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी अधिक द्वारा, अवधियों के पास लिखित में किये जा सकेंगे।
- (ख) इस सूचना के गजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अध्ययन द्वारा, अधिकारीकरण के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पार्टीकरण — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 40 के में परिचित हैं, वही अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची:

8 बाष्पा कृषि भूमि विधि चक्र 1 प्रांगन, श्रीगंगानगर जो उत्तर प्रशिक्षण, श्रीगंगानगर द्वारा उस मुद्रा 2285 दिनाक 12-10-81 पर पंजिवड़ विक्रय पत्र में छोड़ दिया गया है।

(मांहन मिह)

महाम प्राधिकारी

सहायक आयकर आयुक्त (निर्गमन)

अर्जन रेज जयपुर

सारंख 14-7-8 :

मोहर

*जो मानू न हो काट दे तिर।

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1256/-

Government of India
Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
Date : 14/7/82

Whereas, I, Mohan Singh being the competent authority under Section 269D of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961)(herein after referred to as the 'said Act'), and bearing No. Agi. land situated at Sri-ganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Srigananagar on 12/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income Tax-Act, 1922(11 to 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for

the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said act to the following persons, namely:—

- (1) Shri Pyara Singh, Swaran Singh and Bachittar Singh sons of Sh. Varyan Singh R/o Chak 1-A Chhoti, Srigananagar. (Transferor)
- (2) M/s. Ganesh Udyog 1-A Chhoti, Srigananagar. (Transferee)
-
- (3) Shri/Shrimati/Kumari
(Persons in occupation of the property)
- (4) Shri/Shrimati/Kumari
Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:— The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that chapter.

THE SCHEDULE

8 bigha of agriculture land situated at Chak 1-A Chhoti, Srigananagar and more fully described in the sale deed registered by S. R. Srigananagar vide No. 2285 dated 12-10-81.

Date 14-7-82

(MOHAN SINGH)

Seal :

Competent Authority
(Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur)

* Strike off where not applicable

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 व (J)
के अधीन सूचना

आदेश संख्या : राज / महा ० भा० अर्जन / 1257

भारत मरकार,
कार्यालय महायक आयकर आयुक्त (निर्गमन) अर्जन रेज, जयपुर
तारंख : 14 जुलाई, 1982

यह मुझे मोहन सिंह आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें प्रयोग उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 269 'व' के अधीन संभव प्राधिकारी को, यह लिखित करने का कारण है कि

स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है और जिसकी सं० भवन है तथा जो श्रीगंगानगर में स्थित है, (और इसमें उपर्युक्त अनुभूति में और पूर्ण स्पष्ट से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ट अधिकारी के कार्यालय श्री गंगानगर में, रजिस्ट्रीकर्ण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधिन, तारं द्वा 5-10-1981 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विषयास करने का कारण है कि यथा पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे हृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तथा पाया गया प्रतिफल, निम्नविवित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखत में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कर्मी करने या उससे बचने में सुविधा के निष्ठा, और, या

(ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिस्ते भारत यात्राय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरितियों द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना आहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए,

अतः उक्त अधिनियम की धारा 269 घ के अनुसरण में, मेरे उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपाधारा (1) के अधीन निम्नलिखित अविक्तियों, अर्थात्:—

(1) श्री महाबीर प्रसाद गुप्ता पुत्र श्री नानक चन्द गुप्ता निवासी गंगानगर वर्तमान निवासी 3 प्रीतम रोड डालानवाला, देहरादून (अन्तरक)

(2) श्री पवन कुमार लंगा पुत्र श्री किशनलाल लीला निवासी पुरानी आवादी, श्रीगंगानगर द्वारा मैरम कृष्णा टाकीज, श्रीगंगानगर (अन्तरित)

* (3) श्री /अमरी /कुमारी----- (वह व्यक्ति जिसके अधियोग में सम्पत्ति है।)

* (4) श्री/अमरी/कुमारी ----- (वह व्यक्ति, जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है।)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अंतर्जन के लिए कार्यालयां करता हूँ उक्त सम्पत्ति के अंतर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप—

(क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तारीख से 30 दिन को अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भोतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,

(ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भोतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकें।

स्पष्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के परिमापित हैं, वही अर्थ होता जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुभूति

मैसमं कृष्णा टाकीज, 28 हॉटस्ट्रीमल रिया, श्रीगंगानगर का 7 प्रतिशत भाग जो उप पंजियक श्रीगंगानगर द्वारा अम संख्या 2192 दिनांक 5-10-81 पर पंजिबद्ध विक्रय पत्र में और विस्तृत स्पष्ट से विवरणित है।

(मोहन सिंह)

तारीख 14-7-82

मध्यम प्राधिकारी

मोहन.....

महायक आयकर अधिकारी (निरीक्षण)

* (जो लागू न हो उसे काट दीजिए)

अंतर्जन रेज, जंगपुर

NOTICE UNDER SECTION 269 D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1257/

Government of India

Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
dated 14/7/82

Whereas, I, Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income Tax Act, 1961(43 of 1961) hereinafter referred to as the 'said act', have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. . Building situated at Sriganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the registering officer at Sriganganagar on 5-10-81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said act to the following persons namely:—

(1) Shri Mahabir Pd. Gupta s/o Sh. Nanakchand Gupta R/o Ganganganagar at present 3-Preetam Road, Dehradun, (Transferor)

(2) Shri Pawan Kumar Lilla S/o Sh. Krishnalal Lilla R/o Old Abadi Sriganganagar, C/o Krishna Talkies, Sriganganagar... (Transferee)

- *(3) Shri/Shrimati/Kumari,....(Person in occupation of the.....property)
 *(4) Shri/Shrimati/Kumar.....(Person whom the.....)

.....undersigned knows to be interested in the property objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- (a) by any of the aforesaid persons within period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

*Strike off where not applicable.

Explanation :—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

7% share of M/s. Krishna Talkies, 28-Industrial Area, Sriganganagar and more fully described in the sale deed registered by S.R. Sriganganagar vide No. 2192 dated 5-10-81.

(MOHAN SINGH)

Date : 14-7-82

Competent Authority

Seal :

(Inspecting Assistant Commissioner of
Income Tax Acquisition Range,
Jaipur).